मन्त्रदृष्टा नारी - अपाला

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
समन्वयक
वैदिक हैरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

मन्त्र-दर्शन- "अपाला" का नाम ब्रह्मवादिनी के नाम से प्रसिद्ध है। आपने अपनी तपश्चर्या के प्रभाव से ऋग्वेद के आठवें मण्डल के ९१वें सूक्त की सम्पूर्ण ७ ऋचाओं को दृष्टिगोचर किया था। इस सूक्त के ७वें मन्त्र में "अपाला" के नाम का भी उल्लेख है'। इससे यह बात निर्विवाद सिद्ध होती है कि उपर्युक्त सम्पूर्ण सूक्त की ऋषि अपाला ही हैं। हमारे इस कथन की पुष्टि वृहद्देवता (६।९९/१६०), सायण-भाष्य (८।९१) और नीतिमञ्जरी (पृ० २७८-८१) से भी होती है। ऋग्वेदीय इस सूक्त में अपाला के वैदुष्य का पता चलता है, जिसके कारण वैदिक-साहित्य में, उसकी ख्याति है। इन्द्र की स्तुतिपरक प्रार्थना, जिसे अपाला ने सूक्त की ऋचाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है, उसका सारांश है-

हे देव ! हम ऋषिकन्याएँ आपका साक्षात्कार करना चाहती हैं; परन्तु आपको जानने में असमर्थ हैं। आपकी असीम, महिमामयी माया है, जिसके कारण आपको अज्ञेय माना गया है। हे सोम! इन्द्र को प्रसन्न करने के एक मात्र तुम्हीं साधन हो। अतः तुम इन्द्र के लिये धीरे-धीरे प्रवाहित होकर हमारी स्तुतियों को चरितार्थ करो। हम तुम्हें सामर्थ्यवान् इन्द्र के लिये निष्पन्न करती हैं, जिससे प्रसन्न होकर इन्द्र भगवान् हमें अपाला से सुपाला बना दें।

जीवन-वृत्त- सायणाचार्य ने अपाला के जीवन-वृत्त पर विस्तृत प्रकाश डाला है। महर्षि अत्रि की कुटिया सन्तति के अभाव में सदा सूनी-सी रहती थी। महर्षि-दम्पत्ति की प्रबल इच्छा थी कि उनका घर पुत्र या पुत्री के जन्म से सनाथ हो जाये। प्रभु की कृपा से अत्रि के घर अपाला का आविर्भाव हुआ। आश्रम का कोना-कोना इस कन्या की किलकारियों से मुखरित हो उठा। ऋषि बाल-मण्डली के साथ खेलते हुए अपाला ने अपनी बाल्यावस्था पार की।

अकस्मात् एक दिन पिता अत्रि की दृष्टि अपाला के सौन्दर्यपूर्ण शरीर पर पड़ी, जहाँ उन्हें कुष्ठ (श्वित्र) के छोटे-छोटे चिह्न दृष्टि-गोचर हुए। ऋषि की सम्पूर्ण प्रसन्नता विषाद में परिणत हो गयी। ऋषि ने अपनी शक्ति-भर उन कुष्ठचिह्नों को दूर करने का प्रयास किया; किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्ततोगत्वा महर्षि ने सोचा कि वे अपनी पुत्री के बाह्य-शरीर को निर्दोष करने में असमर्थ एवं अक्षम रहे हैं। इसलिए अब अपाला के आन्तरिक बोध से उसे अलौकिक बनाने का निर्णय लिया।

महर्षि अत्रि की विलक्षण शिक्षण पद्धति ने अल्पकाल में ही अपाला को एक विदुषी के रूप में तैयार कर दिया। वेद वेदांगों की विविधता सप्त सिन्धु की तरह अपाला के वशवर्ती हो गयी। इस सुकन्या के कल-कण्ठ से वेद-मन्त्रों का उच्चारण तपोवन को पवित्र करने लगा। मुनिजन इसके प्रगाढ़ वैदुष्य के सामने नतमस्तक होकर अपाला को सरस्वती का अवतार मानने लगे।

अपाला को विवाह के योग्य समझकर महर्षि ने एक सुपात्र वर का अन्वेषण किया। अपाला का पाणिग्रहण ऋषि कुशाश्व से वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न हुआ। अपाला के लिये नया घर (पतिदेव का घर) भी स्वातन्त्र्य और प्रसन्नता का आगार था। सब कुछ था, परन्तु अपने पतिदेव का वह स्नेह और समादर प्राप्त न था, जिसके लिये प्रत्येक नारी लालायित रहती है। विदुषी अपाला को समझने में देरी नहीं लगी कि क्यों उसके पतिदेव उससे उदासीन रहते हैं? स्त्रीत्व की मर्यादा को बनाये रखने के लिये अपाला का सहज स्वभाव विद्रोह कर उठा। सहन-शीलता की भी सीमा होती है। एक दिन अपाला ने अपने पति से पूछा "क्या आप मेरे त्वग्दोष के कारण मुझे अपरिचित समझते हैं" ?

कृशाश्व ने दुःखभरे शब्दों में उत्तर दिया- "मेरा अन्तःकरण इस समय एक अन्तर्द्वन्द्व में फँस गया है। प्रेम की पवित्रता मुझे पतिपरायणा ब्रह्मवादिनी अपाला के गुणों का जहाँ एक ओर प्रशंसक बनाती है, वहीं उसके शरीर की कुरूपता मुझे उससे कोसों दूर रहने को बाध्य करती है"। प्रेमपाश में बँधी पत्नी के इस घोर अपमान ने अपाला के हृदय को झकझोर दिया। स्त्री-जाति की इतनी भर्त्सना, सर्वस्व दान करने वाले अर्द्धांग की इतनी बड़ी धर्षणा नर द्वारा !

वेद-वेदांगों की विपुल ज्ञानराशि भी शरीर के बाह्यदोष के कारण अपाला को अपने पति का प्रेमपात्र नहीं बना सकी। यही सोचकर अपाला ने अपने को तपस्या की उष्णता में तपाने का निर्णय किया; क्योंकि तपस्या के अनल में तप्त होकर मानव निखर उठता है। यह सोचकर वे वृत्रहन्ता (इन्द्र) के आराधन में लग गयीं। देवेन्द्र को प्रसन्न करने का सबसे बड़ा साधन सोम-रस है। अपाला ने सोम को सम्बोधित करते हुए कहा- "हे सोम ! आप धीरे-धीरे प्रवाहित हों, जिससे पान करने में इन्द्र को कष्ट न हो"। इन्द्र ने सोमपान किया और प्रसन्न होकर अपाला को वर माँगने को कहा। अपाला ने वर माँगते समय सर्वप्रथम अपने पिता के खल्वाट सिर पर बाल उग जाने की बात की। इसके बाद पिता के ऊसर खेतों को उपजाऊ बनाने की याचना की और अन्त में अपने शरीर के कुष्ठ को दूर करने का आग्रह किया। इन्द्र ने "एवमस्तु" कहकर अपनी उपासिका की चिर-साधना को सार्थक कर दिया।

विमर्श - अपाला ने अपनी इस स्वतन्त्र साधना से यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक-संहिताकाल की नारियाँ पुरुष के पौरुष को भी चुनौती देने में कभी पीछे नहीं रहीं। यही कारण है अन्त में ऋषि कृशाश्व ने अपाला को अबला समझने की जो भूल की थी, उसके लिए उन्हें पश्चात्ताप करना पड़ा। परित्यक्ता अपाला ने अपने तप के प्रभाव से अपने शरीर को तप्त सुवर्ण की भाँति दिखाकर अपने पति को भी आश्चर्य-चकित कर दिया। सबला नारी ने सिद्ध कर दिया कि वह अपने तप, त्याग और बलिदान से नर क्या नारायण को भी झुका सकती है।

अपाला द्वारा दृष्ट ऋग्वेद (८।९१।१-७) साहित्यिक सौन्दर्य से भी अनुपम है। इन्द्र को प्रसन्न करने में पंक्ति एवं अनुष्टुप् छन्द का निर्वाह भली-भाँति किया गया है। भाषा-सौन्दर्य एवं सौष्ठव भी ऋचाओं को बोधगम्य करने में सहायक सिद्ध होता है।